भारतीय संदर्भ में स्त्री विमर्श

पूनम रानी
एमए हिंदी (नेट)

सार-

भारतीय समाज और साहित्य में एक समय ऐसा था कि स्त्री-पुरुष दोनों को भी महत्व था। स्त्री आदर ओर सम्मान की पात्र थी। लेकिन धीरे-धीरे नारी को भोग और विलास की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ने स्वयं को अनेक बंधनों से मुक्तरखकर नारी को अनेक बंधनों में जकड़कर रखा। नारी का व्यक्तित्व सृष्टि के आरंभ से ही देशकाल एवं वातावरण के अनुसार कभीदबता, कभी उभरता दिखाई देता है। अपनी अस्मिता एवं मूल्याधिकार के लिए उसे निरंतर संघर्ष करना पड़ा है। मानव जीवन का अस्तित्व नर एंव नारी के अस्तित्व पर टीका हुआ है। आज दोनों के आपसी सहयोग के कारण ही विकास संभव हुआ है। संसार रूपी रथ के नरनारी दो पहिये हैं। दोनों का सुचारू रूप से संचलन ही मानवीयता का विकास है। इसलिए नारी को भी समाज में उचित स्थान मिलना चाहिए। मानवीय गुणों की दृष्टि से विचार किया जाए तो पुरुष की तुलना में स्त्री अधिक मानवीय है। नारी की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि, 'स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है। यदि शक्ति का अभिप्राय पाशविक शक्ति से, तो स्त्री सचमुच पुरुष की अपेक्षा कम शक्तिशाली है। यदि शक्ति का मतलब नैतिक शक्ति से है, तो स्त्री पुरुष से कई गुणा अधिक शक्तिमान है। इस दृष्टि पर विचार करे तो मानवीय सभ्यता एंव संस्कृति के विकास में उसका स्थान पुरुष से भी ऊंचा है।

मुख्य शब्द :- विमर्श, अस्मिता, आविष्कार, प्रतिष्ठित, प्रगतिशील, तथ्यमूलक

विमर्श का तात्पर्य है- विचार, विवेचन, जांच आदि। स्त्री विमर्श शब्द 'स्त्री और विमर्श' इन दो शब्दों से बना है जिसका अर्थ है : नारी, उसके आस्तित्व से जुड़े विभिन्न पहलू। विचार विनीयम के माध्यम से स्त्री के जीवन संघर्ष पर मंथन करना, स्त्री-विमर्श है।

नारी विमर्श को कुछ लोग पश्चिमी आविष्कार कहते हैं लेकिन यह सही नहीं है। यह अत्यंत गंभीर विषय है। पुरुष समाज में पुरुष के बनाए नियमों के, उसके वर्चस्व के, स्त्री की अपनी विवशता है, कि वह अपने को उस जकड़न से, उन रूढ़ियों से, विपरीताओं से निकलने की कोशिश नहीं करती। अर्थात् स्त्री स्वभाव को समझना स्त्री विमर्श का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। यह न कोई विचारधारा है, न पश्चिम का संस्कार। आज के बदलते समय में बदलती दृष्टि से हमें सोचने की जरूरत है। यह समय कुछ परम्पराओं से मुक्त होने का है। मुक्त होने का अर्थ अपनी संस्कृति भूलना नहीं। एक संतुलनात्मक लचीलापन आधुनिक सोच ही मुक्त होना है। जो स्त्री विमर्श में मिलता है।

इसमें रिश्ते भी हैं- केवल पति-पत्नी ही नहीं परिवार में मां के रूप मे, बहु है, बहन-बेटी है। समाज में स्त्री ऐसा व्यक्ति है जिसके तार हर वर्ग से जुड़े हैं। यह प्रेम का रस सब ओर दिखता है, जोड़ता है उसे भरता है।

इसमें एक रूप शोषण का भी आता है। यह शोषण पति से भी हो सकता है, परिवार में हो सकता है। समाज से भी। बाहर जब नौकरी, प्रशासन व्यसाय करने समाज में आती है। इस शोषण की पीड़ा, अस्मिता का संघर्ष है जो नारी विमर्श का प्रमुख मुद्दा बनता है। उसकी इच्छा के विरूद्ध एक दृष्टि भी वह नहीं सह पाती। यहां नारी का विद्रोही, संघर्षरत रूप है जो नारी विमर्श में उभरा है। नारी विमर्श बहस का मुद्दा उतना नहीं जितना जागृति का है। यहां आधुनिकता संतुलित है नारी से जुड़ी कुंठा है,समस्या है यही सब मुख्य रूप से नारी विमर्श के अंतर्गत हैं।

नारी विमर्श की अभिव्यक्ति का मूल स्वर नारियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं नारी-पुरुष की समानता के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। आर्थिक स्वावलंबन के अभाव में नारी अपने ही परिवार में शोषित होती रही है। क्योंकि विरोध करने का न उसमें साहस है और न संबल नारी-पुरुष के लिए समाज ने जो अलग-2 प्रतिमान निर्धारित कर रखे हैं उनका मुखर विरोध भी कथा साहित्य में हुआ है।

प्रकृति प्रदत्त ईश्वर द्वारा दिए गए अधिकार स्त्री के लिए बोझ नहीं, वरदान है। अगर पुरुष आकाश है तो स्त्री धरती। बादल का टुकड़ा ऊपर से गिरता है तो धरती सहेज लेती है पर जब धरती

फटती है तो कहीं कोई सहेजने वाला नहीं होता। भारतीय नारी सृष्टि के आरंभ से अनंत गुणों की आगार रही है।पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुंद्र के समान धीर गंभीरता, चंद्रमा के समान शीतलता, पर्वत के समान उच्चता हमें एक साथ नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होती है। वह मनुष्य के जीवन की जन्मदात्री है। वह माता के समान हमारी रक्षा करती है। बचपन से लेकर मृत्यु पर्यन्त वह हमारी संरक्षिका बनी रहती है। भारतीय नारी त्याग और बलिदान के लिए जगत प्रसिद्ध है।

महर्षि रमण ने कहा है :-

'पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील और जीव मात्र के लिए करूणा संजोने वाली महाकृति का नाम नारी है।' प्राचीन काल में भी धार्मिक कार्य पत्नी के सहयोग के बिना पूर्ण नहीं होता था। धार्मिक कार्यों के अलावा वे रणक्षेत्र में भी पति को सहयोग देती थी। आज की नारी एक रूप में दो युगों का आदर्श लिए हुए है। पाश्चात्य संस्कृति से नारी को संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है।

अंग्रेजी लेखक गोल्डस्मिथ के इस कथन से पुष्ट हो जाते हैं:-

'नारी उस वृक्ष के समान है जो झुकने से झुक तो सकती है
लेकिन टूट नहीं सकती।'

हमारे समाज की अनेक नारियां, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व प्राप्त करके आधुनिक नारी के सम्मान की रक्षा कर रही है तथा समस्या क्षेत्रों में भागीदारी करके नारी और पुरुष के मध्य असमानता की दीवार को तोड़ने का प्रयास भी कर रही है।

समाज की नारी केवल व्यक्तित्व विकास के लिए ही नहीं समाज सेवा में भी अग्रणी है। इस संदर्भ में मदर टेरेसा का नाम उल्लेखनीय है। भारतीय संविधान में यह स्पष्ट लिखा है कि किसी भी नारी के केवल नारी होने के कारण ही अधिकारों से वंचित नहीं रखा जा सकता। महिला के विकास में व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। आर्थिक स्वतंत्रता के बिना महिला विकास असंभव है, महिला की आर्थिक परंतत्रता के कारण ही पुरुष वर्ग ने उस पर अधिकार जमाया है। एक सामान्य महिला घरेलू, पारिवारिक उद्योग धंधों, कृषि कार्यों में अनुमानत: 10 से 16 घंटे कार्य करती हैं परंतु दुर्भाग्य है कि उनके इन घरेलू कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता। महिलाओं का आर्थिक कार्यों में योगदान बढ़ाने, कार्यशील उपयोगी और उत्पादक व्यक्ति के रूप में राष्ट्र की आर्थिक मुख्य धारा से जोड़ने के लिए शासकीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

मार्क्सवादी लेखकों के अनुसार : 'आर्थिक परतंत्रता ही नारी को वैयक्तिक स्वतंत्रता के मार्ग में बाधा का निर्माण करती है।'

आज नारी की सामाजिक स्थिति में अवनति के लिए जिन कारकों को महत्वपूर्ण माना जाता है उसमें दहेज प्रथा इस सूची में निर्विवाद रूप में विद्यमान है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि नारी-वर्ग को भारत में आदिकाल से पूज्या समझा जाता रहा है, व्यवहार में वह सदा से ही स्मृतिकारों द्वारा वर्णित अपनी बंधक नियति भोगने को बाध्य रही है। प्राचीन काल में हिन्दू विवाह की आधारभूत मान्यताओं के धर्म से जुड़ाव के कारणों में कन्यादान करना और कन्यादान के समय गुप्तदान देना मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रमुख माना जाता था। यह कुरीति आज भी ज्यों की त्यों निम्न, मध्यम और उच्च वर्गों में पाई जाती है। उच्च और मध्यम वर्ग को किनारे रखें, तो भी निम्नतर वर्ग भी अपनी कन्या के विवाह में सामर्थ्य न होते हुए भी कर्ज लेकर वर पक्ष को पर्याप्त दहेज देकर सन्तुष्ट करता है। अपनी ही जाति में विवाह करने की अपरिहार्यता, कुलीन वर, प्रतिष्ठित परिवार प्राप्त करने की लालसा, भौतिकवादी इच्छाएं, वैज्ञानिक शिक्षा के अभाव के कारण दहेज की व्याधि बेल के पल्लवित होने में खाद-पानी का काम करते हैं। आगे चलकर इस व्याधि बेल में ऋण पारिवारिक, सामाजिक और सामुदायिक विघटन, अपराध वृति जैसे फल लगते हैं। यही बीज प्रगतिशील मानदंडों पर प्रहार करते हैं।

नारी अधिकार प्रगति इत्यादि कई प्रकार के तथ्यमूलक विचारों के मूल्यों की बात पर गौर करने के बाद जरा हम उस पक्ष की ओर भी दृष्टिपात करें जो नारी को मात्र घर के कटघरे में रखना चाहते हैं। पति परायणता, आंखों में आंसू लिए कभी पिता, पति या पुत्र के सहारे जीने के लिए वह बाध्य हो जाती है। जैसे मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को उनका जीवन परिभाषित करते हुए कहा-

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यह कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

पुरुष ने हमेशा स्त्री के लिए निर्णय लिए हैं और स्त्री अभी तक पुरुष निर्णय को स्वीकार करती रही है। उसने विरोध नहीं किया, सहना ही अपनी नियति मान लिया यह सहनशीलता ही आज नारियों के लिए अभिशाप बन गया है। वास्तव में यदि समाज में प्रगति हुई तो अकेले पुरुष के बल पर नहीं हुई। जिस प्रकार धुरी के कमजोर होने पर पहियों की गतिशीलता में कमी तथा धुरी न होने पर पहियों का कोई अस्तित्व नहीं है। ठीक उसी प्रकार नारी के कमजोर होने पर परिवार कमजोर और नारी के न रहने पर परिवार या समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। परिवार संस्था संगठित होने के स्थान पर तार-तार हो जाता है। बिखर जाता है। नारी ही परिवार को आपस में

जोड़े रखती है। नारी के शिक्षित न होने या उसका सही विकास न होने पर परिवार समाज को नष्ट होने, बिखरने में लेशमात्र समय नहीं लगता है। नारी के महत्व परिवार, समाज व देश की उपयोगिता के संबंध में स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि :- 'एक पुरुष के शिक्षित सुसंस्कृत होने का अर्थ है– अकेले उसी का उपयोग बनना। परंतु एक स्त्री यदि शिक्षित, समझदार और सुयोग्य हो तो समझना चाहिए कि पूरे परिवार के सुसंस्कृत बनने का सुदृढ़ आधार बन गया।

परिवार में सुख, शांति, सौम्यता, सुव्यवस्था, सुसंस्कारिता भरा वातावरण बनाए रखने के लिए जिम्मेदारी नारी की है। इसके लिए आवश्यकता है कि नारियां अपना स्वयं का व्यवहार भी उसी स्तर पर रखे-छोटों के प्रति दुलार, स्नेह बराबर वालों के प्रति तथा बड़ों के प्रति परिवार की भावनात्मक विचारात्मक, निर्माणात्मक संबंधी जिम्मेदारी बड़ी सरलता से पूर्ण कर सकती है। हिन्दी कथाकारों ने भी अपनी रचनाओं में 'नारी की स्थिति' अवधारणा को ध्यान में रखकर जो विचार व्यक्त किए है वे 'स्त्री विमर्श' के अंतर्गत आते हैं। पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति को दर्शाने के प्रयास उपन्यासों एवं कहानियों में बराबर होते आए हैं। विशेष रूप से कुछ नारी लेखकों ने इस दिशा में विशेष प्रयास किए हैं। उस वर्ग से संबंधित होने के कारण वे नारी मन को अधिक प्रामाणिक ढंग से व्यक्त कर सकी है।

चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में लिखा-'पुरुष विरोध करते हुए पुरुष की तरह निरंकुश और स्वच्छन्द हो जाना नारी मुक्ति नहीं है।।'

निष्कर्ष :

भारत में महिलाओं की स्थिति उत्थानपतन एंव पुन: उत्थान की कहानी है। महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में पुरुषों के समान ही प्रवेश करना होगा और पुरुषों के साथ-साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चलना होगा। वर्तमान में जहां महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है तथापि इनकी स्थिति में और भी सुधार की आवश्यकता है, लेकिन यह भी सत्य है मिस यूनिवर्स एवं विश्व सुंदरी का सम्मान पाने से लेकर प्रधानमंत्री पद तक, वायुयान चालकों से लेकर किसी भी उन्नत तकनीकी क्षेत्रों में आज स्त्रियों को पूर्ण अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

अत: नारीवादी चाहती है कि व्यक्तिगत व राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को उस नारीवादी दृष्टिकोण से जोड़ा जाए। अत: औरतों को हर विषय पर अपना दृष्टिकोण निश्चित करना चाहिए। चाहे वह दो देशों के बीच लड़ाई हो, आर्थिक, राजनीतिक विकास संबंधी नीतियां, मानव अधिकार या नागरिक अधिकार हो चाहे पर्यावरण संबंधी मुद्दे हो उनके लिए उपयोगी साहित्य तैयार किया जाए। स्त्री भी गतिवान मनुष्य की नस्ल का एक हिस्सा है, किवाड़ खोलकर बाहर की दुनिया देखने का उसे हक मिलना चाहिए।

संदर्भ :-

1. भारतीय नारी : वर्तमान समस्याएं और भावी समाधान : डॉ. आरपी तिवारी
2. नागार्जुन के नारी पात्र पृष्ठ- 77 : प्रो. अर्जुनघरत
3. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज पृष्ठ- 372 डॉ. अशोक तिवारी